

# जाग देखो सुख जागती

श्रीमती कंचन आहूजा (जयपुर)

सुख की अनुभूति कई प्रकार से की जा सकती है। सुख का अनुभव हम स्वप्न अवस्था में भी करते हैं। उस अवस्था में जब कि हमें अपनी सुष बिल्कुल नहीं होती और हमारा अपने ऊपर कुछ बस नहीं होता है। ऐसा ही एक सुख हमें स्वप्न अवस्था में श्री राजी ने ब्रज में दिखाया। इस में हमें अपनी और अपने धनी की सुष नहीं थी, लेकिन राजी से मूल सम्बन्ध होने के कारण हमने यार भाव से राजी के सुखों का अनुभव किया, फिर रास में आधी नींद व आधी जागृति की अवस्था में इस सुख का अनुभव किया। अब तीसरा जागती का सुख श्री देवचन्द्र जी ने श्री इन्द्रावती जी ने और भी ऐसे-२ मोमिन जिन्हें श्री जी ने जगाया और उन्होंने जाग कर इस जागती ब्रह्माण्ड के सुखों का अनुभव किया। अब प्रश्न यह उठता है कि जागती है क्या? तो जागती से तात्पर्य है कि हमें इस बात की सुष आ जाये कि मैं कौन हूँ और कहा से आई हूँ और मेरा घर कहाँ है और मेरा भरतार कौन है और उन से मेरा सम्बन्ध क्या है। यह जान लेना है, जागती है जैसे कि श्री देवचन्द्र जी ने जानना चाहा।

जब बरस भया अग्याहरवाँ,  
तब मन उपज्यो यह विचार,  
मैं कौन कहाँ से आइयो,  
कहाँ है मेरा भरतार।

श्री देवचन्द्र जी के मन में यह तीन प्रश्न उत्पन्न हुए मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ?

मेरा धनी कौन है? इन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए वे किस तरह से घर से निकल पड़े और कहाँ-कहाँ जाकर खोजा यह सब हम सब अच्छी तरह जानते हैं। हर सन्तों, विद्वानों, प्रत्येक धर्म और मसजिदों में खोजने पर भी उन्हें कोई इन तीन प्रश्नों का उत्तर नहीं बता सकें। परन्तु जब तक उन्हें इन तीन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला, वह एक पल भी चैन से नहीं बैठे। जब तक धनी ने स्वयं आकर उन्हें उनकी और अपनी पहचान नहीं करवा दी। बस सही अर्थों में इस बात को समझ लेना ही जागती है और जब धनी ने मेहर करके जगा दिया तो उन्होंने जागकर जागती ब्रह्माण्ड बृज, रास और परम धाम के सुखों का अनुभव किया। और इस बात को एवं अनुभव को सब साथ को भी करवाया। और हम सुन्दर भी यही कर रहे हैं।

अब जाग देखो सुख जागती,  
ए सुख सुहागिन जोग।  
तीन लीला चौथी घर की,  
इत चारो का यामें भोग ॥

जाग देखो के अर्न्तगत सबसे पहले हमें अपनी पहचान करनी है। पहचान क्या करनी है? कि ये पाँच तत्व का शरीर तो नाशवान है। और आत्मा तो अमर है। जिसका कभी नाश नहीं होता। तो इस शरीर के नष्ट हो जाने के बाद हमारी आत्मा का मूल ठिकाना कहाँ है? पहले हमें अपनी

आत्मा के वास्तविक ठिकाने को पहचानना है ।  
और जब धनी स्वयं आकर हमें इस बात की  
सुध आकर बतायें कि मैं इस ब्रह्माण्ड की नहीं  
मेरी परमात्म श्री राज के चरणों में है । और  
मैं उन्हीं का अंग हूँ । तो मैं उनसे जुदा क्यों हूँ ।  
इस बात के दिल में लगते ही श्री राज का विरह  
सताने लगता है । और हमारी हालत भी उस  
मीन के समान होती है, जो जल बिना तड-  
पती है ।

चौपाई :- (१) विरह गत सोई जाने,  
जो मिलकर बिछुडी होय ।  
जो मीन बिछुडी जल थे,  
या गत जाने सोय ।  
(२) पिया मोहे स्वांत न आवही,  
न कछु नैनो नीर ।  
पिया बिन जो पल जात है,  
एहनिस थके शरीर ॥

बस दिल में ये दर्द लगता है । रूह को  
एक पल भी चैन नहीं मिलता । जब तक धनी  
स्वयं अपनी पहचान करवा नहीं देते, क्योंकि  
स्वयं श्री राज जी रूहों का दर्द सह नहीं सकते  
और अपनी पहचान करवा देते हैं । एक ही  
बात के समझ में आ जाने से कि मैं कौन हूँ और  
अंगना भाव के आते ही और वास्तव में जिन  
मोमिनों को अपनी पहचान हो गई, उनकी  
रहनी स्वतः ही बदल जाती है और जब उसे  
ये मालूम हो जाए कि मैं उस अक्षरातीत धाम  
धनी का अंग हूँ तो वह जब तक अपने प्राण-  
चाथ अपने धनी को प्राप्त नहीं कर लेती,  
एक पल भी चैन से नहीं बैठती ।

चौपाई :- खोज गृहागिन न थके,  
जो लो पार के पार ।

नित खोजे चरनी चडे,  
नये नये करे विचार ॥

इस प्रकार जो श्री राज की अंगना हैं ।  
अपने प्रियतम को प्राप्त किये बिना करार नहीं  
पातीं । इसी का नाम जागनी है ।

जाग देखो के अन्तर्गत दूसरा प्रश्न  
मन में आता है । यदि मैं अपने धनी की अंगना  
हूँ तो मेरा घर कहाँ है ? श्री राज जी की  
मेहर से जब इस बात की सुध आ जाती है कि  
मेरा घर इस चौदह भवन में नहीं हमारा घर  
तो अक्षर के पार परमधाम है । राज जी  
महाराज तो परमधाम के सारे सुख हमारे ही  
लिये लाये हैं और परम धाम के बारे में आज  
तक कोई नहीं जान सके, ऐसे परम धाम के  
जरे जरे को स्वयं श्री राज जी ने हम रूह  
मोमिनों के वास्ते ही वाणी में वर्णन किये हैं ।  
और परम धाम के सुखों की पहचान करवाई ।  
और बार-बार यही समझा के कह रहे हैं कि  
ए रूह मोमिनों जाग के देखो परम धाम के सब  
सुखों के अधिकारी तुम हो । अपने आप को  
और अपने घर को पहचानो तो सचमुच हम  
परम धाम के सुखों का अनुभव यहीं बैठकर  
कर सकते हैं । पर शर्त यह है, कि पहले हम  
स्वयं जागें इसीलिए स्वयं श्री राज जी हमें जाग-  
रूक कर रहे हैं और कह रहे हैं ।

चौपाई :- जागनी को जागते सुख,

सोभा कह्यो न जायें या मुख ।

वास्तव में जागकर देखे, तो परम धाम के  
हमारे ऐसे सुखों के आगे दुनिया के सारे दुख  
फीके पड़ जाते हैं । और जिसे श्री राज जी ने  
मेहर करके जगा दिया है, फिर वे माया के  
झूठे सुखों को छोड़कर परम धाम के अखण्ड

जिन सुख पिउ जी ना मिले,  
सो सुख देऊं रे जलाए ।  
जिन दुख मेरा पिउ मिले,  
मैं सो दुख लेऊं बुलाए ॥

यहां सब का स्वभाव जुदा-जुदा है ।  
कईयों का स्वभाव बहुत गुस्से, मैं अंहकार,  
जिद्दी किस्म का होता है । कईयों को अपने  
पैसे का अंहकार होता है । कईयों को अपनी  
सुन्दरता का मान होता है । कईयों के दिमाग  
में होता है कि उन जैसी कोई सेवा नहीं कर  
सकता । वह अपनी सेवा भी किसी से करा  
कर खुश नहीं होते । कईयों को अपने ज्ञान  
इलम का अंहकार होता है । अजीब सी दुनियां है  
यह और यहां अजीब से ही है हम सब । पर  
दुख ऐसी चीज है जो बड़े बड़ों को झुका कर  
रख देती है । हम बीमार हो जाएँ सख्त अस्प-  
ताल में दाखिल हो जाये । हमें सब से सेवा  
करानी ही पड़ेगी । हमें किसी के हाथ का  
खाना पसन्द नहीं । तो भी हमें सब के हाथ का  
खाना बिमारी में खाना ही पड़ेगा । दुख  
हमारी जिद्द को तोड़ डालेगा । आज कल की  
दुनियां में पैसा ही समझा जाता है । पैसा है  
तो सब है । पर पैसे का क्या करना । जब  
हमारा अपना बेटा अपना खून सख्त बिमार है ।  
हम भाग भाग कर उसका इलाज कई डाक्टरों  
से करा रहे हैं । पैसा पानी की तरह बहा रहे  
है पर डाक्टर बड़े से बड़े यही कह रहे हैं  
कोई इलाज नहीं । पैसा भी क्या कर लेता है ।  
दुख तो बड़े बड़े पत्थर दिलों को भी हिला  
डालता है । रुला डालता है । दुख से माया  
की तमन्नाओं का नाश होता है और दिल में  
पित्रा के मिलन की तड़फ लगती है ।

दुख तें विरजे उपजे, विरहे प्रेम इस्क ।  
इस्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक ॥

दुख बिना न होवे जागनी,  
जो करे कोट उपाए ।  
धनी जगाए जागहीं,  
न तो दुख बिना क्यों ए न जगाए ॥

दुख बहुत प्यारी चीज है । बड़े बड़े  
ग्रन्थों में दुख की महिमा गाई गई है । दुख  
प्यारा वही जो मिला देता है पिया से, धनी  
से । अन्त में मैं यही कहूँगी कि हमें हमेशा ही  
अपने पिया की याद में रहना चाहिए । दुख  
हो सुख हो । वाणी पढ़नी चाहिए । भजन  
कीर्तन सुन्दर साथ के मिलावे से कभी दूर नहीं  
होना चाहिए । ऐसा करने से हमें कभी भी  
दुख का अनुभव नहीं होगा । हमें लगेगा हम  
अपने पिया की याद में बहुत सुखी है और हम  
जैसा सुखी इस दुनियां में कोई नहीं । कबीर  
जी का भी कहना है —

दुख में सुमिरन सब करे,  
सुख में करे ना कोए ।  
जो सुख में सुमिरन करे,  
तो दुख काहे को होए ॥

अगर हम अपने पिया को सच्चे दिल से  
याद करे तो वह हम से दूर नहीं । आशूक-  
माशूक कभी एक दूसरे से अलग हो ही नहीं  
सकते । एक बार अपने धनी को रिझा कर तो  
कोई देखे ।

कहे नूर जमाल कुरान में, छोड़ के यह अंधेर ।

एक बार साद करो मुझको,  
मैं तुमें जी जी कहुँ दस बेर ॥

न्यारा निमख ना होवहीं, करने पड़े न याद ।  
आसिक को मासूक का, कोई इन विध लाग्या स्वाद